## संपादक की कलम से.....

# रिहाई की राहें

रामअवतार बैरवा

साहित्य लेखन हर किसी की सोच का विषय नहीं। लाखों में कोई एक इस सागर में डूबकर चिंतन के शब्द बिन्दु निकालकर लाता है । लिखते सब ही हैं। पढ़े-लिखे व्यक्ति को अपने अध्ययन के समय हर दिन कुछ-न-कुछ लिखना ही पड़ता है पर हर लिखी हुई बात साहित्य नहीं होती। हर खबर पत्रकारिता भी नहीं होती। पत्रकारिता के लिए मंजिल का होना जरूरी है और साहित्य के लिए मंजिल का नहीं मिलना। हर पत्रकार, साहित्यकार नहीं हो सकता पर हर साहित्यकार, पत्रकार हो सकता है। ऐसे में उसे दो अलग रास्तों पर चलना पड़ता है । कुछ विरले साहित्यकार रहे हैं, जिनकी साहित्य और पत्रकारिता दोनों पर अच्छी पकड़ रही। महावीर प्रसाद द्विवेदी को उस श्रेणी में सबसे ऊपर रखा जा सकता है । उनके साहित्यकार और पत्रकार में यह लड़ाई अवश्य रहती होगी कि कौन श्रेष्ठ है ? उत्तर भी मिलना मुश्किल है । साहित्य और पत्रकारिता का जो आधार तैयार हुआ और आगे चलकर आलोचना की एक बड़ी पीढ़ी तैयार हुई, जिससे साहित्य में बड़ा निखार, सुधार और परिष्कार हुआ, महावीर प्रसाद द्विवेदी उसकी नींव के मजबूत पत्थर रहे हैं । उन्होंने साहित्य और पत्रकारिता में अन्तर को भी बेहतर तरीके से स्पष्ट किया ।

आज के कवि हर तुकबंदी को कविता मान रहे हैं और जानकारी को कविता से इतर का साहित्य । किसी भी कथा, उपन्यास या नाटक में कथ्य का मजबूत प्रकटीकरण भी साहित्य नहीं है, जब तक कि वह व्यक्ति की भावना और संवेदना को न छूले । दो बिछड़े भाइयों का किसी मेले में मिल जाना कहानी नहीं है। उनका मिलकर भी एक, दूसरे को जान-बूझकर न पहचानना और एक दूसरे की देखभाल, निगरानी और सहायता करना कथा तो हो सकती है, उपन्यास भी, नाटक भी पर जब तक उसे शब्द और शिल्प के मजबूत धागों के साथ पिरोया नहीं जाएगा, सुंदर और टिकाऊ माला नहीं बन सकेगी । यह बात भी सत्य है कि समय के साथ माला का सूख जाना जरूरी है पर सूखे पुष्पों की महक मन को सदियों तक किसी को भी तरोताजा रख सकती है ।

साहित्य ऐसी भटकन है, जिसकी कोई मंजिल नहीं, ऐसा पागलपन है ,जिसका कोई इलाज नहीं, ऐसी ख्वाहिश है, जिसका कोई अंत नहीं । बहुत से कवि/साहित्यकार कोई एक कविता, कहानी, नाटक,

उपन्यास थोड़ी - सी चर्चित होते ही खुद को बहुत बड़ा मानने लग जाते हैं। जब कि वह उनके लेखन की शुरुआत भी नहीं होती । ग़ालिब, निराला और प्रेमचंद से उनके समकालीन मित्रों, पत्रकारों ने एक ही तरह का सवाल पूछा था कि आपकी सबसे बेहतर रचना कौन-सी आप मानते हैं ? जवाब तीनों का लगभग एक-सा था कि वह तो अभी लिखी ही नहीं। फिल्मों के लिए गीत लिखने वाले गीतकार संतोष आनंद से आज भी कोई पूछता है तो वही उत्तर सामने आता है कि वो तो अभी लिखूंगा । भटकन का अंत, साहित्य का अंत है ।

आज पहले जैसा साहित्य हमारे सामने क्यों नहीं ? जो तुलसी लिख गए, वो निराला क्यों नहीं लिख पाए, जो निराला लिख गए वो भारत भूषण या कुंवर बेचैन क्यों नहीं। सूरज, चांद, सितारे, धरती, आकाश सब वही और वहीं का वहीं है । सारी भावनाएं, हंसी, दर्द और दुनिया वही है फिर कमी कहां रह गई ? समस्याएं, कब, किसके सामने नहीं रही ? उत्तर एक ही है हमारी हर डगर आसान हो गई है । किसी भी मंजिल तक पहुंचने के लिए अब अधिक और अतिरिक्त मेहनत नहीं करनी पड़ती। मोहब्बत भी अपना रास्ता भटक गई है । स्नेह और अपनत्व चारदीवारी में सिमट गये हैं । बिछुड़न की राहों में संचार और तंत्र - यंत्र की मजबूत सड़क बन गई है। किसी न किसी की याद में भोजन किया कि नहीं, ये जानना भी बहुत आसान हो गया है । व्यक्ति अब हाड़-मांस का शरीर भर न रहकर बहुत बुद्धिमान और चालाक बनने के भ्रम में मशगूल हो गया है। विश्वास और आस के महल टूट गए हैं । साहित्य छटपटाता-सा एक कोने में खड़ा है । नयी सदी का एक पहर बीत चुका है । उम्मीद की कोई किरण नजर नहीं आ रही । युवाओं के हाथों में मोबाइल की ऐसी बेड़ियां पड़ गई है, जिसकी रिहाई के कोई मजबूत वकील नजर नहीं आ रहा। दूर-दराज गांवों और कस्बों में कुछेक वकील तैयार होने की कोशिश करते भी हैं तो रंगीन सितारों से भरे आसमां की चौंध उनके पक्ष को मजबूती से रखने में बाधक बन जा रही है। कोई माने न माने रिहाई का रास्ता साहित्यिक गलियारों से ही निकलेगा।

-रामअवतार बैरवा